Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। ओ३म् ।।

वैदिक ग्रंथमाला का पुष्प ३३

पुराणों का पोलखाता

लेखक

४३ क्रान्तिकारी ग्रंथों के यशस्वी प्रणेता

अखिल भारतीय स० प्र० प्रतियोगिता पुरस्कार विजेता

डा० रामकृष्ण आर्य

सत्यार्थ रत्न, सिद्धान्त शास्त्री, विद्या वाचस्पति

बी० एस-सी०, बी० ए० एम० एस० (आयुर्वेदाचार्य)

चिकित्सा अधिकारी

अति० प्रा० स्वा० केन्द्र कारोबनकट, जि० भदोही

प्रकाशक

वैदिक पुस्तकालय

ग्रा० माधोरामपुर, पो० परसीपुर, जि० भदोही, (उ०प्र०)

दयानन्दाब्द १७२

सृष्टि संवत् १९६०८५३०६७

कार्तिक सं० २०५३ विक्रमी — प्रथम संस्करण : १०००

नवम्बर सन् १९९६ ई० — मूल्य : ३ रुपये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

कलि मल ग्रसेउ धर्म, सब लुप्त भये सद्ग्रंथ ।
दंभिन्ह निज मत कल्पिकर, प्रगट किये बहु पंथ ।।

महाभारत के बाद जब वेदरूपी सूर्य अस्त हो गया तो सारे संसार में अज्ञान अँधेरा छा गया। धूर्तों ने वेद विरुद्ध ग्रंथों- पुराण आदि की रचना करके अपने-अपने सम्प्रदाय खड़ा किये। भोली-भाली जनता धूर्तों के जाल में फँस गई और धूर्त सारे जनता को लूटने लगे।

पुराणों को देखने से ज्ञात होता है कि सारे पुराण परस्पर विरुद्ध एवं अत्यन्त अश्लील ग्रंथ हैं। उनमें दुराचार की सारी बातें भरी पड़ी हैं। देश को पतन के गर्त में झोकने में उनका विशेष हाथ रहा है।

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने कहा-

"पुराणों के बनाने हारे गर्भ में ही क्यों नहीं नष्ट हो गये? या जन्मते ही क्यों नहीं मर गये? क्योंकि इन पापों से बचते तो आर्यावर्त्त देश दुःखों से बच जाता।" (सत्यार्थ प्रकाश, समु०११)

प्रस्तुत ग्रंथ में पुराणों का पोलखाता खोलकर रख दिया गया है। इसको देखने से कोई पुराणों के जाल में नहीं फँसेगा और जो पुराणों के जाल में फँस गये हैं, उनका छुटकारा हो जायेगा। इस ग्रंथ से समाज और देश का भला होगा। इसी आशा और विश्वास के साथ।

आपका
डा० रामकृष्ण आर्य
श्रावणी पर्व
संवत् २०५० विक्रमी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

भूमिका

i पुराण १८ नहीं हैं ४

ii पुराण ४२० ग्रंथ हैं ५

iii पुराणों में वेद-विरुद्ध बातें ६

iv पुराणों में विज्ञान-विरुद्ध बातें १०

v पुराणों में परस्पर विरोधी बातें १२

vi पुराणों में भ्रष्टाचार की बातें १३

vii पुराणों में मुक्ति के नुस्खें १६

viii पुराणों में देवताओं, ऋषियों, महापुरुषों एवं ब्राह्मणों की निन्दा २१

उपसंहार २२

❑❑

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ पुराण १८ नहीं है

पौराणिक विद्वानों की मान्यता है कि पुराण १८ हैं-

१. मत्स्य पु०	२. मारकण्डेय पु०	३. भागवत पु०
४. भविष्य पु०	५. ब्रह्म पु०	६. ब्रह्मवैवर्त पु०
७. ब्रह्मांड पु०	८. विष्णु पु०	९. वामन पु०
१०. वाराह पु०	११. वायु पु०	१२. अग्नि पु०
१३. नारद पु०	१४. कूर्म पु०	१५. पद्म पु०
१६. स्कन्द पु०	१७. लिंग पु०	१८. गरुड़ पु०

परन्तु पुराणों में १८ पुराणों की ३ सूचियां मिलती हैं जो परस्पर भिन्न हैं। १८ पुराणों की उपरोक्त सूची भा० पु०, देवी भा० पु० तथा म० पु० के अनुसार है। दूसरी सूची ब्रह्मवैवर्त्त पु० तथा प० पु० में है और तीसरी सूची भ० पु० में। तीनों सूचियों को देखने पर ज्ञात होता है कि जहाँ प्रथम सूची में वायु पु० को मुख्य पुराणों में माना है, वहाँ दूसरी सूची में वायु पु० को मुख्य न मानकर उसे सूची से निकाल दिया गया है और उसके स्थान पर शिव पु० को सूची में सम्मिलित कर लिया गया है। तीसरी सूची में नारद पु० एवं ब्रह्मवैवर्त्त पु० के स्थान पर नृसिंह पु० एवं शिव पु० को रखा गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यदि वायु पु० तथा शिव पु० दोनों को पुराण मानें तो पुराण १९ हो जाते हैं। यदि नारद पु० तथा नृसिंह पु० दोनों को पुराण मानें तो पुराण २० हो जाते हैं। इतना ही नहीं भा० पु० ३ हैं- श्रीमद्भागवत पु० देवीभागवत पु० और महाभागवत पु०। अब पुराण २२ हो गये। और सुनिये-

षड विंशति पुराणानां। (शिव पु० उमा सं० १३/१४)

अर्थात् पुराण २६ हैं।

अतः सिद्ध है कि पुराण १८ नहीं हैं।

❑❑

---

*म द्वयं भ द्वयं चैव, ब त्रयं व चतुष्टयम्।
अनाकूपस्कलिंगानि, पुराणानि पृथक्-पृथक्।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ पुराण ४२० ग्रंथ हैं

पौराणिक विद्वानों की मान्यता है कि पुराण व्यासजी बनाये हैं। परन्तु पुराणों के अध्ययन से पता चलता है कि पुराण व्यास की रचना नहीं हैं। क्योंकि महर्षि व्यासजी महाभारत काल में द्वापर के अन्त में हुए थे जिसे लगभग ५ हजार वर्ष होते हैं जबकि पुराण महाभारत के बहुत बाद कलियुग में लिखे गये हैं। बौद्धमत के उदय से लेकर अंग्रेजों के भारत में शासन काल तक पुराणों की रचना होती रही है। बौद्ध मत के प्रवर्त्तक बुद्ध एवं जैन तीर्थंकर ऋषभदेव को २४अवतारों की सूची में गिना है। भविष्य पुराण में ईसा, मूसा, बाबर, अकबर, तुलसी, कबीर, अंग्रेजों के १० वें लार्ड तक का उल्लेख है।

इसका तात्पर्य यह है कि पुराण बनाने वाले अनेक लोग रहे हैं जो समय-समय पर पुराणों की रचना करते रहे हैं।* पुराण धूर्तों ने बनाये हैं- धूर्तैः पुराण चतुरैः (देवी भा० पु० ५/१६/१२)।उन्होंने पुराणों को व्यास के नाम से इसलिये प्रसिद्ध किया है कि पुराणों की मान्यता में कोई सन्देह न करे। लोगों को धोखा देने के लिए पुराणों पर 'व्यासकृत' छपा रहता है। अतः पुराण ४२० ग्रंथ हैं।

□□

---

*महर्षि दयानंद ने लिखा है:-

"राजा भोज के राज्य में व्यासजी के नाम से मार्कण्डेय और शिव पुराण किसी ने बनाकर खड़ा किया।इसका समाचार राजा भोज को होने पर उन्होंने उन पंडितों को हस्त छेदनादि दंड दिया और कहा कि जो कोई भी काव्यादि ग्रंथ बनावे तो अपने नाम से बनावे ऋषि-मुनियों के नाम से नहीं।

यह भागवत बोब देव का बनाया है जिसके भाई जयदेव ने गीत गोविन्द की रचना की है।"

(सत्यार्थ प्रकाश, समु०११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

III पुराणों में वेद विरुद्ध बातें

(१) वेद निन्दाः-

ब्रह्मा ने सावित्री से संभोग किया, जिससे वह गर्भवती हो गई। उसने १०० वर्ष तक गर्भ धारण किया, तदनन्तर चारों वेदों को जन्म दिया।

(ब्रह्मवैवर्त्त पु० ब्रह्म खंड ६/१,२)

समीक्षाः- वेदों की उत्पत्ति व्यभिचारपूर्ण लिखना नीचों का काम है। यह सृष्टिक्रम विरुद्ध गप्प है।

(२) यज्ञ निन्दाः-

पृथ्वी स्तोत्र का पाठ करने वाला व्यक्ति पापों से मुक्त हो जाता है और १०० अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है। इसमें कोई संशय नहीं।

(ब्रह्मवैवर्त पु० प्रकृति खंड ८/६५)

समीक्षाः- यहाँ पुराणकार ने यज्ञ की निन्दा अप्रत्यक्षरूप से किया है। जबकि वैदिक ग्रंथों में लिखा है-

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्मः। अर्थात् यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है।

अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।अर्थात् यज्ञ संसार की नाभि है।

(३) नारी निन्दाः-

नारी पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। वह कुलटा होती है।

(ब्रह्मवैवर्त पु० कृष्ण जन्म खंड ७५/२)

समीक्षाः- पुराण में नारी को अविश्वसनीय तथा कुलटा लिखकर निन्दा किया है। देखो! वेद में नारी को राष्ट्र का केतु लिखा है-

अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी ।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत् ।।

(ऋ १०/१५९/२)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) अवतारवादः-

पुराणों में अवतारों की २ सूची दिया है-

भा०पु० १/३ के अनुसार	भा० पु० २/७ के अनुसार
१. सनक	१. वाराह (सूकर)
२. सूकर	२. सुयज्ञ
३. नारद	३. कपिल
४. नारायण	४.दत्तात्रेय
५. कपिल	५. सनक
६. दत्तात्रेय	६. नारायण
७. यज्ञ	७. पृथु
८. ऋषभदेव	८. ऋषभदेव
९. पृथु	९. हयग्रीव
१०. मत्स्य	१०. मत्स्य
११. कच्छप	११. कच्छप
१२. धन्वन्तरि	१२. नरसिंह
१३. मोहिनी	१३. वामन
१४. नरसिंह	१४, धन्वन्तरि
१५. वामन	१५. परसुराम
१६. परसुराम	१६. राम
१७. व्यास	१७. वलराम
१८. राम	१८. कृष्ण
१९. वलराम	१९. व्यास
२०. कृष्ण*	२० बुद्ध
२१. बुद्ध	२१. कल्कि
२२.कल्कि	

*कृष्ण जी पर्वती के अवतार थे। (महाभागवत पु०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीक्षाः- आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० श्रीराम आर्य ने लिखा है-

"सनातनी लोग विष्णु के २४ अवतार मानते हैं, परन्तु भा० पु० में इसका पोल खोल दिया है। क्योंकि यहाँ उपस्थित दोनों सूचियां संख्या एवं क्रम में परस्पर भिन्न हैं तथा अधूरी हैं। २४ अवतारों की एक भी सूची नहीं है। इतना ही नहीं पहली सूची में राम अवतार के पहले व्यास अवतार लिखा है जो कि इतिहास विरुद्ध उल्टी बात है। पहली सूची के दो अवतार:- नारद व मोहिनी को अयोग्य समझकर दूसरी सूची में नहीं रखा है तथा हय ग्रीव नामक नया अवतार घूसेर दिया है। क्या पौ० विद्वान् २४ अवतारों की सूची पेश कर सकते हैं ? जो अधूरी सूचियाँ दी हैं उनमें परस्पर विरोध क्यों है? क्या व्यास अवतार को २४ अवतारों के नाम भी ठीक से याद नहीं थे?" (अवतार रहस्य)

(५) मूर्तिपूजाः-

पाठे चतुर्णां वेदानां, तपसा करणे सति।
तत्पुण्ये लभते नूनं, शालग्रामशिलार्चनात् ।।

(ब्रह्मवैवर्त पु० प्रकृति खंड २१/८५)

चारों वेदों के पाठ करने तथा तपस्या करने से जो फल प्राप्त होता है वह शालग्राम पत्थर की पूजा से प्राप्त हो जाता है।

समीक्षाः- यहाँ मूर्तिपूजा का विधान है जो कि वेद-विरुद्ध है। वेद में लिखा है- अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते। (यजु०४०/९) अर्थात् जो मूर्तिपूजा करते हैं वे घोर नरक में जाते हैं।

(६) साम्प्रदायिकताः-

निर्माल्यं शंकरादीनां, स चांडालो भवेद् ध्रुवम्।
कल्प कोटि सहस्राणि, पच्यते नरकाग्निना।।

(पद्म पु० उत्तर खंड २८२/६८)

जो ब्राह्मण एक बार भी शंकर आदि का प्रसाद खा लेता है वह निश्चय ही चांडाल हो जाता है और हजारों-करोड़ों कल्प तक नरक की अग्नि में पड़ता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवनिन्दाकरं दृष्ट्वा, चातयित्वा प्रयत्नतः।
हत्वामानं पुनर्यस्तु, स याति परमं गतिम्।।

(सौर पु० ३६/३३)

शिव की निन्दा करते हुए जिसे देखें उसे किसी भी तरह मार डालें और स्वयं मर जावें तो वह मोक्ष को प्राप्त होता है।

समीक्षाः- इस प्रकार हम देखते हैं कि पुराणों में परस्पर लड़ाने वाली बातें लिखी हैं जबकि वेदों में एकता की बातें हैं-

अन्यो अन्यमभिहर्यत् वत्सं जातमिवाघ्न्या।। (अथर्व ३/३०/१)

नवजात बछड़ा और गाय की तरह एक दूसरे को प्रेम करो।

(७) पशुबलि एवं नरबलिः-

कर्त्तव्येयं महापूजा, नाना बलिभिरादरात्।
छाग मेषादि महिषैः, सामिषान्नैस्तथैव च।।

(महा भा०पु० ४६/१६)

पितृमातृविहीनं च, युवकं व्याधि वर्जितम्।
विवाहितं दीक्षितं च, परदार विहीनकम्।।

(ब्रह्म वै० पु० प्रकृति खंड ६४/१०१)

□□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

IV पुराणों में विज्ञान विरुद्ध बातें

(१) सूर्य निकट चन्द्रमा दूर

भूमेर्योजन लक्षेतु, सौरं मैत्रेय मंडलम्।
लक्षात् दिवाकरस्यापि, मंडलं शशिनः स्थितम्।। वि०पु०२/७७/५

पृथ्वी से १ लाख योजन (४ लाख कोस) दूर सूर्य और सूर्य से भी १ लाख योजन दूर चन्द्र है।

समीक्षा : विज्ञान के अनुसार पृथ्वी से सूर्य ९ करोड़ ३० लाख मील दूर है तथा चन्द्रमा २ लाख ३८ हजार मील दूर है। इसलिए पुराण की बात विज्ञान विरुद्ध गप्प है। यदि पुराण की बात सत्य होती (पृथ्वी से सूर्य १ लाख योजन दूर होता) तो पृथ्वी राख का ढेर हो गई होती।

(२) हनुमानजी सूर्य को निगल गये थे।

भ० पु०, प्रति सर्ग ४/१३/३९

समीक्षाः- यह गप्प है क्योंकि सूर्य पृथ्वी से १३ लाख गुना बड़ा और जलता हुआ आग का गोला है तथा पृथ्वी से १५ करोड़ किमी दूर है। जबकि हनुमान इस पृथ्वी पर एक बच्चा थे।

(३) मत्स्यावतार की लम्बाईः-

मत्स्यावतार (मछली) की लम्बाई १ लाख योजन था। भा०पु० ८/२४

समीक्षाः- यह विज्ञान-विरुद्ध है क्योंकि पृथ्वी की परिधि २४ हजार मील है, इसमें ८ लाख मील लम्बा मछली कहाँ रहा होगा?

(४) वाराह अवतार की उत्तप्तिः-

ब्रह्मा की नाक से वाराह अवतार (सुअर) की उत्त्पत्ति हुई ।

भा० पु० ३।१३/१८

समीक्षाः- क्या ब्रह्मा की नाक सुअर की फैक्ट्री थी? अथवा ब्रह्मा कोई मदारी था और तमाशा दिखा रहा था जो उसकी नाक से सुअर निकल आया? पौराणिकों ने अपने अवतार को तमाशा बना दिया है। वास्तव में यह गप्प है क्योंकि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाक के छिद्र से नाक का मल निकलता है सुअर नहीं।

(५) गर्भाधान के विभिन्न मार्गः-

(क) मुखः- शिव का वीर्य पीने से विष्णु सहित सभी देवताओं को गर्भ हो गया। (सौर पु० ५३/३६)

(ख) नाकः- संज्ञा घोड़ी का रूप धरके खड़ी थी। उसे देखकर सूर्य कामातुर हो गये और घोड़ा का रूप धरके उसके मुख में मैथून कर दिया। संज्ञा ने उनके वीर्य को नाक से ग्रहण किया। इससे गर्भ रह गया और २ देवता (अश्विनी कुमार) पैदा हुए। (भ० पु०, प्रति सर्ग ४/१८/३६)

(ग) कान- शिव ने विष्णु का मोहिनी रूप देखा तो कामातुर हो गये और उनका वीर्यपात हो गया। उस वीर्य को सप्तर्पियों ने दोना में इकट्ठा किया और गौतम की पत्नी अंजनी के कान में डाल दिया, जिससे हनुमानजी पैदा हुए। (शिव पु०, शतरुद्र सं० २०/५-७)

(६) प्रसव के भिन्न-भिन्न रास्ते

(क) आंखः- अत्रि के नेत्र से चंद्र उत्पन्न हुए। (भा० पु०६/१४/६)

(ख) नाकः- ब्रह्मा की नाक से सुअर (अवतार) पैदा हुआ। (भा० पु० ३/१३/१८)

(ग) नाभिः- विष्णु की नाभि कमल से ब्रह्मा पैदा हुए। (लिंग पु०, पूर्वार्द्ध ८६/३१)

(घ) लिंगः- शंकर के लिंग से शुक्राचार्य पैदा हुए। (शिव पु०, युद्धखंड ४७/४८)

(ङ) मस्तकः- ब्रह्मा के मस्तक से शंकर पैदा हुए। (लिंग पु०, पूर्वार्द्ध ८६/३१)

(च) पसलीः- शंकर के पसली से ब्रह्मा और विष्णु पैदा हुए। (लिंग पु० १६/३)

(छ) जांघः- ब्रह्मा के जाँघ से असुरों की उत्पत्ति हुई। (भा० पु० ३/२०/२३)

(ज) हाथः- देवी के हाथ से त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) पैदा हुए। (देवी भा० पु०)

(झ) जलः- समुद्र से चंद्रमा की उत्पत्ति हुई। (प० पु०, सृष्टि खंड)

(ञ) मलः- पार्वती के पसीना (मल) से गणेश पैदा हुए। (शिव पु० रुद्र सं १३/२०)

(ट) मर्द के पेट सेः- राजा युवनाश्व की कोख से मान्धाता पैदा हुए। (वि० पु०)

(ठ) दोना सेः- द्रोणाचार्य दोना से पैदा हुए। (शि० पु० उमा सं० ४/३३)

□□

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

V. पुराणों में परस्पर विरोधी बातें

(१) ब्रह्मा शंकर के बाप थे

मन्नाभिः पंकजात् जातः, पुरा ब्रह्मा चतुर्मुखः ।
तत् ललाट समुत्पन्नो, भगवान् वृषभध्वजः ।।

-लिंग पु० पूर्वार्ध ६६/३१

(विष्णु ने कहा) मेरे नाभि-कमल से ब्रह्मा तथा ब्रह्मा के मस्तक से शंकर पैदा हुए।

शंकर ब्रह्मा के बाप थे

अयं मे दक्षिणे पार्श्वे, ब्रह्मा लोक पितामहः।।२।।
वामे पार्श्वे च मे विष्णु,विश्वात्मा हृदयोद्भवः।।३।।

-लिंग पु० अध्याय१६

(शंकर जी बोले) मेरे दायें पसली से ब्रह्मा तथा बायें पसली से विष्णु पैदा हुए।

(२) ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव एक ही हैं

सृष्टि स्थिति अन्तकरणी, ब्रह्मा विष्णु शिवात्मिकम्।
सं सं ज्ञायाति भगवन्, एक एव जनार्दनः।।

- वि० पु० १/२/६६

वह एक भगवान् जनार्दन ही जगत् की उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय करने के कारण ब्रह्मा-विष्णु-महेश कहलाता है।

ब्रह्मा, विष्णु, एवं शिव एक नहीं हैं।

विष्णु ब्रह्मादि रूपाणां,ऐक्य जानन्ति येमानवाः।
ते यान्ति नरकं घोरं, पुनरावृत्ति वर्जितम्।।

-ग० पु०

जो लोग ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव को एक मानते हैं वे घोर नरक में जायेंगे। (इतना ही नहीं) उनका पुनर्जन्म भी नहीं होगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VI पुराणों में भ्रष्टाचार की बातें

(१) जुआ खेलना

शंकर और पार्वती ने जुआ खेला। जब शंकर हार गये तो पार्वती ने उन्हें नंगा करके छोड़ दिया।(प०पु०, उत्तर खंड १२२/२५,२६)

समीक्षाः जुआ अति खतरनाक है। एक कहावत है-

जुआ खेले होत है, सुख-सम्पति का नाश।

राजकाज नल से छुटा, पांडव किये बनवास।।

इसीलिए वेद कहता है- अक्षैर्मा दीव्यः। (ऋग्वेद १०/३४/१३) जुआ मत खेलो।

(२) शराब पीना

श्रीकृष्ण शराब पी रहे थे अपनी १६१०८ पत्नियों के साथ।

(भ० पु०)

समीक्षाः बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तद् उच्यते।

शराब पीने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है जिससे बड़ा से बड़ा अहित हो सकता है।

(३) मांस खाना

राजा सुयज्ञ के राज्य में सुपक्व मांस ब्राह्मणों को नित्य खिलाया जाता था।

(ब्रह्म वैवर्त पु०, प्रकृति खंड ५०/१२)

समीक्षाः- मांसाहारी बन्धुओं सावधान! जीवों पर दया करो। मांस खाना छोड़ दो। पशु, पक्षी आदि सभी जीव ईश्वर की प्रजा हैं। जीवों को खाकर परम पिता परमेश्वर के कोप का भाजन मत बनो। तुम मनुष्य हो,मनुष्य की तरह रहो। देखो! वेद कहता है- मनुर्भव। (ऋग्वेद १०/५३/६) मनुष्य बनो। शैतान मत बनो।

(४) वेश्या गमन

शिव ने महानंदा वेश्या के साथ ३ दिन तक ऐश किया।

(शि० पु०, शतरुद्र सं २६/२५-२७)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीक्षाः- वेश्यागमन अत्यन्त बुरी बात है। कहा है-

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद्, वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतो हतः।।

-महाभारत

अर्थात् चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करना चाहिए। धन तो आता-जाता है। धनहीन हीन नहीं है लेकिन चरित्रहीन मुरदा के समान है।

अंग्रेजी में कहा गया है-

Money is lost, nothing is lost.
Health is lost, something is lost.
Character is lost, everything is lost.

अर्थात् धन गया तो कुछ नहीं गया। स्वास्थ्य गया तो कुछ गया। चरित्र गया तो सब कुछ गया।

(५) मां, बहिन व बेटी से विवाह

य तु ज्ञानमयी नारी, वृणेद्यं पुरुषं शुभम्।
कोऽपि पुत्रः पिता भ्राता, स च तस्या पतिर्भवेत्।।

(भ० पु०, प्रति सर्ग ४/१८/२६)

अर्थात् जो पढ़ी-लिखी स्त्री हो, वह किसी भी पुरुष को वर ले, चाहे वह उसका पुत्र, पिता या भाई ही क्यों न हो; वही उसका पति हो जाता है।

समीक्षाः- मां, बहिन या बेटी से विवाह अत्यन्त गंदी बात है। यदि यही सनातन धर्म है तो कुत्तों का धर्म किसे कहेंगे? इसीलिए दुनियां सनातन धर्म पर थूकती है।

(६) सुअर दानः-सुअर दान सबसे उत्तम है। यह पवित्र एवं पुण्यदायक है। इससे बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं।

(भ० पु० उत्तर पर्व १६४/२)

समीक्षाः- डा० श्रीराम आर्य ने लिखा है-" यदि यह प्रथा चालू हो जाये और सनातनी लोग पौ० पंडितों को हर शुभ अवसर पर गऊ-दान की जगह सुअर दान करने लगें तो पौ० पंडितों का एक सुन्दर धन्धा हो जायेगा। पौ० पंडित रोजाना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह-शाम हाथ में डंडा लेकर सुअर चराया करेंगे तथा उनका दूध भी पिया करेंगे। वे सुअर बेचकर माला-माल भी बन सकेंगे, जिससे उनका आर्थिक संकट भी दूर हो जायेगा।

इधर पौ० पंडितों की दुआएँ मिलने से सनातनी लोगों का भी कल्याण होगा। हमारी शुभ कामना है कि सनातनी बन्धु इस पुराणोक्त व्यवस्था पर शीघ्र आचरण करने की शक्ति पशु-पति शिवजी से प्राप्त करें।

(पौराणिक गप्प दीपिका)

(७) वीर्य पिलानाः- एक बार शिवजी ने अपना वीर्य विष्णु सहित सभी देवताओं को पिला दिया जिससे उन्हें गर्भ रह गया। (सौर पु० ५३/३६)

समीक्षाः- क्या शिवजी का वीर्य प्रसाद था जिसे सभी देवता प्रेम से पी गये? क्या वीर्य पीने से गर्भ रह सकता है? और क्या देवता स्त्री थे जो उन्हें गर्भ रह गया? वास्तव में यह चण्डूखाने की गप्प है।

(८) अंडकोष खिलानाः- एक बार शिव ने दावत दी। शिवदूती देर से पहुँची। शिव ने कहा- "मेरे नाभि के नीचे २ गोल फल हैं, तुम उसे खालो।"

(प० पु०, सृष्टि खंड २७)

समीक्षाः- पौ० पंडित बतावें कि नाभि के नीचे २ गोल फल क्या होता है? क्या वे कभी खाये हैं? देखो! नाभि के निचे २ वृषण (Testis) होता है। शिव ने शिवदूती से वृषण खाने की बात कहकर उसका अपमान क्यों किया? क्या यही अतिथि सेवा का सनातनी शिष्टाचार है?

(९) विलक्षण अतिथि सत्कारः-

विष्णुजी गणेश को देखने के लिए शिवजी के घर गये। पार्वती विष्णु पर मुग्ध हो गई। यह देखकर शिवजी ने पार्वती से कहा- "विष्णु को श्रृंगार दान कर दे (कुकर्म करालें)। ब्रह्मवैवर्त्त पु०

समीक्षाः- डा० श्रीराम आर्य ने लिखा है- "अतिथि सत्कार की यह पौराणिक प्रथा पौ० पंडितों के घर चालू है या नहीं? यह तो सनातनी लोग ही जानें। परन्तु हमारा विचार है कि इस प्रथा के चालू होने पर पौ० पंडितों के घर रोजाना अतिथियों की लाइन लगी रहेगी और इस मँहगाई के युग में वे आर्थिक संकट में पड़ जायेंगे।"

(पौराणिक गप्प दीपिका)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VII पुराणों में मुक्ति के नुस्खे

(१) सुअर दानः-

सुअर दान सबसे उत्तम है। यह पवित्र एवं पुण्यदायक है। इससे बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं।

(भ० पु०, उत्तर पर्व १६४/२)

(२) गुरु स्तोत्र का पाठः-

इससे अपुत्र को पुत्र, पत्नीहीन को पत्नी मिलती है तथा रोगी का रोग दूर हो जाता है।

(ब्र० वै० पु०, कृष्ण जन्म खंड अ० ५६)

(३) शालग्राम (पत्थर) की पूजाः- देखो, पृष्ठ ८

(४) विष्णु का नामः-

सर्वेषामपि अघवतां, इदमेव सुनिष्कृतम् ।
नाम व्याहरणं विष्णोऽपि अतस्तत् विपयामतिः ।।

अर्थात् सभी प्रकार के पापों का नाश विष्णु के नाम लेने से ही हो जाता है।

(भा० पु० ६/२/१०)

(५) रण्डियों का उद्धारः-

एक बार कृष्णजी अपनी १६१०८ पत्नियों के साथ बैठे शराब पी रहे थे। उसी समय उनका लड़का साम्ब वहाँ पहुँच गया। साम्ब की सुन्दरता और यौवन को देखकर कृष्ण की सभी पत्नियां कामोन्मत्त हो उठीं। और उनका रजः पात हो गया। यह देखकर कृष्ण ने उन्हें शाप दे दिया कि तुम लोग वेश्या हो जाओ। जब उन्होंने अपने उद्धार का उपाय पूछा तो कृष्ण ने कहा-

"रविवार के दिन तुम लोग पौ० पंडितों को बुलाकर खूब पूजा किया करना (संभोग कराना)।"

(भ० पु० उत्तर पर्व अ० १११ तथा, प०पु० सृष्टि खंड अ०२३)

समीक्षाः- व्यभिचारिणी गोपियों (भा० पु० १०/४७/६०) के गुप्तांगों के कीड़े मार-मारके (डाक्टरी करके) उद्धार कृष्ण ने किया (पं० दीनानाथ शास्त्री ने सनातन धर्मालोक सं० ६ पृ० ५६४-५६६ में लिखा है) तो रंडियों के उद्धार का पेशा स्वयं पौ० पंडित करने लगे। परोपकार के लिए धन्यवाद।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

VIII. देवताओं, ऋषियों, महापुरुषों एवं ब्राह्मणों की निन्दा

(१) देवताओं की निन्दा

त्रिदेवों का सती अनुसूइया से बलात्कार (भ० पु०)
ब्रह्मा का पुत्री से व्यभिचार (भ० पु०)
विष्णु का सती तुलसी व वृन्दा का शील भंग करना (शि० पु०)
शिव का महानंदा से वेश्यागमन (शि० पु०)
देवराज इन्द्र का गौतम की पत्नी अहिल्या से व्यभिचार (शि० पु०)
देवताओं के गुरु बृहस्पति का भाभी ममता से बलात्कार (भ० पु०)
देवताओं के वैद्य अश्विनी कुमार का एक ब्राह्मणी से बलात्कार (ब्र० वै० पु०)

(२) ऋषियों की निन्दा

वशिष्ट मुनि रण्डी से, मन्दपाल मुनि केवटिन से, शुकदेव जी तोती से, कणाद ऋषि उल्लू से, श्रृंगी ऋषि हिरनी से, मांडव्य ऋषि मेंढकी से उत्पन्न हुए। (भ० पु०)

व्यास मुनि व्यभिचार से उत्पन्न हुए। (पुराण)

(३) महापुरुषों की निन्दा

राम की निन्दाः-

(क) त्रेता में दण्डक वन में सारे ऋषि-मुनि राम को देखकर कामातुर हो गये और भोग की इच्छा व्यक्त कीं। द्वापर में राम कृष्ण बने और ऋषि-मुनि गोपियां। तब राम ने उनकी कामेच्छा पूर्ण करके उनको भवसागर से तार दिया।

(प० पु०, उत्तर खंड २४५/१६४,१६५)

(ख) कृष्ण ने कुब्जा से कहा- " तू पूर्व जन्म की सूर्प नखा (रावण की बहिन) है। हे प्रिये! तूने राम जन्म में मेरे लिए बड़ा तप किया था। अब उस तप के प्रभाव से तू मुझे कृष्ण जन्म में भजले (प्राप्त करले)। अब तू मेरे साथ संभोग का आनन्द लूट ले।

(ब्र० वै० पु०, कृष्ण जन्म खंड ७२/५६,५७)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण पर लांछन:—

(क) चीर हरण:- एक दिन गोपियां अपने वस्त्र उतार कर (नग्न होकर) यमुना में स्नान कर रही थीं। उसी समय कृष्ण वहाँ पहुँच गये और उनके वस्त्रों को लेकर कदम के पेड़ पर चढ़ गये। जब गोपियों ने अपने वस्त्र माँगें तो कृष्ण ने जल से बाहर निकलके वस्त्र लेने को कहा। गोपियां नग्न थीं, अतः अपने गुप्तांगों को छिपाके जल से बाहर आयीं। कृष्ण ने उनसे दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते करने को कहा। जब गोपियों नें वैसा किया तब कृष्ण ने उन्हें वस्त्र दिया और उनसे हँसी मजाक किया।

(भा० पु० १०/२२)

समीक्षा:- डा० श्रीराम आर्य ने लिखा है- "पौ० विद्वान् इस कथा को सत्य मानते हैं और यह भी मानते हैं कि कृष्ण भगवान् विष्णु के अवतार थे तथा पुराण व्यास (अवतार) की रचना हैं। मैं पूछता हूँ व्यास जी ने अपने ही अवतार कृष्ण जी की झूठी निन्दा क्यों की है? पौ० पंडित कुतर्क करते हैं कि कृष्ण ने चीर हरण द्वारा गोपियों को उपदेश दिया था कि नग्न होकर स्नान नहीं करना चाहिए। प्रश्न है कि यदि कृष्ण को गोपियों के लिए उपदेश देना अभीष्ट था तो गोपियों का चीर हरण क्यों किया? गोपियों को दोनों हाथ जोड़कर सलाम आलेकुम करने को क्यों कहा? गोपियों से हँसी मजाक क्यों किया?"

(अवतार रहस्य)

(ख) रास लीला:- शरद पूर्णिमा की रात्रि को कृष्ण वंशी बजाने लगे। बासुरी की आवाज सुनकर गोपियां कामातुर हो गईं, यहाँ तक कि अपने माता, पिता, भाई व पतियों के रोकने पर भी न रुकीं और वृन्दावन कृष्ण के पास चली गईं। कृष्ण ने गोपियों को अंक (गोद) में ले आलिंगन किया, नखों को चुभाकर कामोद्दीपन किया और उनके साथ रमण (संभोग) किया। इस पर जब गोपियों को कृष्ण को प्राप्त करने का अभिमान हो गया तो कृष्ण अन्तर्ध्यान हो गये।

कृष्ण के गायब हो जाने पर गोपियाँ उन्हें खोजने लगीं। एक स्थान पर उन्हें २ व्यक्तियों के पद-चिन्ह मिले। इससे उन्होंने सोचा कि कृष्ण के साथ एक गोपी भी है जिसे लेकर वह एकान्त में काम/क्रीड़ा करने गये हैं। उसके आगे उन्हें एक ही व्यक्ति के पदचिन्ह दिखाई दिये जिससे उन्होंने सोचा कि यहाँ गोपी के थक जाने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर कृष्ण ने उसे कंधे पर बैठा लिया। अन्त में उनकी विरह व्यथा देखकर कृष्ण पुनः प्रगट हो गये और पूर्ववत् रास लीला करने लगे।

(भा० पु०, स्कंद १०, रास पंचाध्यायी (२९-३३)

समीक्षाः- डा० श्री राम आर्य ने लिखा है- "हम तो इस कथा को मिथ्या मानते हैं परन्तु पौ० विद्वान् इसे सत्य मानते हैं और पवित्र प्रेम बताते हैं। मैं पूछता हूँ यदि पराई औरतों का किसी पुरुष से इस तरह का संबंध पवित्र प्रेम है तो नाजायज प्रेम किसे कहेंगे? क्या अपने पतियों को तड़फते हुए छोड़कर पराये पुरुष से प्रेम करना सनातन धर्म का सबूत है? क्या गोकुल के गोप शिखंडी थे जो उन्हें पत्नियों की जरूरत नहीं पड़ती थी? क्या सारी रात गोपियां कृष्ण के लिए ही सुरक्षित (Reserve) रहती थीं?

(ग) राधा से व्यभिचारः- एक दिन बालक कृष्ण को लेकर नंदजी वृन्दावन चले गये। कृष्ण ने माया से आकाश बादलों से युक्त कर दिया। इतने में राधा वहाँ आ गई। राधा ने बालक कृष्ण को ले लिया और मुस्कराने लगी तथा कामातुर होकर छाती से लगाकर चूम लिया। इतने में राधा ने एक सुन्दर मंडप देखा। वह वहाँ गई। वहाँ उसने नौजवान कृष्ण को देखा और उसकी गोद खाली। इतने में ब्रह्मा वहाँ आ गये और राधा का हाँथ कृष्ण के हाथ में पकड़ाकर (विवाह कराके) चले गये। इसके बाद राधा-कृष्ण का समागम हुआ। संभोग के बाद राधा मुस्कराने लगी और कृष्ण जी युवावस्था त्यागकर पुनः बालक हो गये। इस कार्य में २४ घंटे लगे। राधा ने बालक कृष्ण को लाकर यशोदा को दे दिया। यशोदा बालक कृष्ण को दूध पिलाने लगी और राधा अपने घर चली गई।

(ब्र० वै० पु०, कृष्ण जन्म खंड ४/१६)

समीक्षाः- कृष्ण के शत्रु द्वारा यह बेतुका गप्प लिखा गया है। बालक कृष्ण का युवती राधा से व्यभिचार लिखना अत्यन्त नीचता है। राधा बालक कृष्ण को लेकर २४ घंटे तक जंगल में रही। माता यशोदा ने अपने दुधमुहे बच्चे की खोज क्यों नहीं की?

महाभारत में राधा का पता नहीं और पुराणों में केवल ब्रह्मवैवर्त्त पु० में राधा का नाम आता है, परन्तु वहाँ लिखा है कि राधा व्रजभानु वैश्य की पुत्री तथा यशोदा के भाई रायाण की पत्नी थी। अर्थात् राधा कृष्ण की मामी थी।

वास्तव में कृष्ण ब्रह्मचारी थे। २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन करने के बाद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उन्होंने रुक्मिणी से स्वयंवर विवाह किया था। परन्तु इसके बाद भी उन्होंने १२ वर्ष तक पत्नी से समागम नहीं किया और घोर तप किया जिससे प्रद्युम्न नामक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ।

हनुमान की घृणित उत्पत्ति

(क) शिव पु० (शतरुद्र सं० २०/५-७) के अनुसार शिव ने विष्णु का मोहिनी रूप देखा तो कामातुर हो गये जिससे उनका वीर्यपात हो गया। उसे सप्तर्षियों ने दोना में इकट्ठा करके अञ्जनी के कान में डाल दिया जिससे हनुमान पैदा हुए।

समीक्षाः- क्या शिव को प्रमेह का रोग था जो मोहिनी को देखकर उनका वीर्यपात हो गया? क्या सप्तर्षि दोना लेकर शिव के पीछे-पीछे दौड़ रहे थे जो उनके वीर्य को इकट्ठा कर लिये? क्या कान में वीर्य डालने से गर्भाधान हो सकता है? वास्तव में यह चण्डूखाने की गप्प है। इस गप्प का खंडन दूसरे गप्पों से हो जाता है। देखो! भा० पु०(८/१२/३३) में लिखा है कि जहाँ-जहाँ शिव का वीर्य गिरा वहाँ वहाँ सोने-चाँदी की खानें बन गईं। भा० प्र० (निघण्टु) के अनुसार वहाँ शिव वीर्य से पारे की उत्पत्ति हुई।

(ख) भ० पु० (प्रतिसर्ग ४/१३/३१-३७) के अनुसार एक बार शिव मानसरोवर पर्वत पर गये। वहाँ केसरी और अंजना बैठे थे। शिव का वीर्य केसरी के मुख में चला गया। इससे केसरी कामातुर हो अंजना से संभोग करने लगा। इसी बीच वायु ने भी केसरी के शरीर में प्रवेश कर १२ वर्ष तक संभोग किया। इससे अंजना को गर्भ रह गया और १ वर्ष बाद बन्दर की शकल वाले (कुरूप) हनुमान को जन्म दिया।

समीक्षाः- हनुमानजी राम के परम भक्त थे। वह बड़े विद्वान और राजा सुग्रीव के मंत्री थे। उन्हें महावीर भी कहा जाता है। हनुमान जी को ३ बाप (शंकर, केसरी और पवन) बताना नीचता की पराकाष्ठा है। दुःख है कि तुलसीदास ने भी आँख मूदकर पुराण का समर्थन कर दिया है-

शंकर सुवन केसरी नंदन। तेज प्रताप महा जग वंदन।
महावीर अतुलित बलधामा। अंजनि पुत्र पवन सुत नामा।।

(हनुमान चालीसा)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) ब्राह्मणों की निन्दा

पूर्व ये राक्षसा राजन्, ते कलौ ब्राह्मणाः ।।

पाखंड निरताः प्रायो, भवन्ति जन वंचकाः ।

असत्यवादिनः सर्वे, वेदधर्म विवर्जिताः ।।

शूद्र सेवा पराः केचिद्, नाना धर्म प्रवर्तकाः ।

वेद निन्दाकराः क्रूराः, धर्मभ्रष्ट अति वादुकाः ।।

(दे० भा० पु० ६/११)

अर्थात् जो पहले के राक्षस थे वही कलियुग के ब्राह्मण हैं। ये (कलियुगी ब्राह्मण) पाखंडी, ठग, झूठे, नास्तिक, मतवाले, शूद्र की सेवा करने वाले, वेदों की निन्दा करने वाले, दुष्ट, धर्म भ्रष्ट और गाल बजाने वाले हैं।

समीक्षाः- पुराणों पर आँख मूदकर विना कान पूँछ हिलाये विश्वास करने वाले पौ० पंडित इस दर्पण में अपना मुँह देखें। यहाँ उन्हें साक्षात् राक्षस घोषित करके उनकी घोर निन्दा किया है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसंहार

पाठक बन्धु! आपने देखा कि पुराण ४२० ग्रंथ हैं। पुराण व्यास की रचना नहीं हैं। पुराण धूर्तों की कपोल कल्पना हैं। धूर्तों ने पुराणों की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए उनपर लेखक की जगह महर्षि व्यास की मुहर लगा दी हैं।

सारे पुराण एक दूसरे के बिरोधी और मिथ्या हैं। पुराणों में वेद विरुद्ध, विज्ञान विरुद्ध, अश्लील एवं अनर्गल बातें लिखी हैं। पुराणों ने आदर्श महापुरुषों, ऋषियों और मुनियों के निष्कलंक पवित्र चरित्र पर अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। कोई भी ऐसी महान हस्ती नहीं, जिसपर धूर्तों ने लांछन न लगाया हो। और तो और समाज के अगुआ ब्राह्मणों को साक्षात् राक्षस बताकर घोर निन्दा किया है।

पुराणों ने समाज को पथभ्रष्ट करने में कोई कसर बाकी नहीं रक्खी है। पुराणों में दुराचार की सारी बातें हैं, जिन्हें देखकर प्रत्येक भारतीय सभ्यताभिमानी का सिर लज्जा से झुक जाता है। पुराणों ने ईश्वर और धर्म को तमासे की वस्तु बनाकर संसार में बदनाम किया है।

पुराणों ने ईश्वर की मूर्ति गढ़कर एक ईश्वर की जगह नाना देवी–देवताओं की पूजा करा दिया और इस प्रकार समाज को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। पत्थर पूजते-पूजते लोगों की अकल भी पत्थर हो गई जिससे वे लिंग (शिव लिंग) भी पूजने लगे।

पुराणों में भ्रष्टाचार की सारी बातें भरी पड़ी हैं। ऐसा कोई भी पाप नहीं जिसका समर्थन पुराणों में न हो। मांस खाना, शराब पीना, जुआ खेलना, वेश्यागमन, बलात्कार आदि सारे पापों का जड़ पुराण हैं। इतना ही नहीं पुराणों में पापों से मुक्ति के नुस्खें बताकर पाप को बढ़ावा दिया है।

इसीलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने पुराणों को अपाठ्य ग्रंथों की कोटि में रखा हैं तथा 'विष सम्पृक्त अन्नवत् त्याज्याः' घोषित किया है।

देखो ! सत्यार्थ प्रकाश. सम०३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी दयानंद को कोटिशः धन्यवाद जिन्होंने पुराणों के ढोल की पोल खोलकर हमें पुराणों के जाल से बचाया। कितने पौ० विद्वान् भी पुराणों को गंगा में प्रवाहित कर दिये और आर्यसमाज में आकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने लगे। परन्तु कतिपय दुराग्रही पौ० पंडित भ्रष्ट पुराणों को सत्य सिद्ध करने में (पुराणों के ऊट-पटांग अर्थ करके) एड़ी से चोटी तक का जोर लगाकर अपना अमूल्य मानव जीवन बर्बाद कर रहे हैं।

पौ० पंडित देश और समाज के शत्रु हैं। ये स्वार्थ में अन्धे और कृतघ्नी हैं जो अज्ञान अंधकार में आकंठ डूबे संसार को पुनः वेदों का प्रकाश दिखाने वाले, दुनियां में ओ३म् का झंडा लहराने वाले, देश का मस्तक ऊँचा करने वाले, मानवता के मसीहा, परमहंस ऋषि दयानन्द को गालियां देते हैं और इसी में अपनी शान समझते हैं। ईश्वर इन्हें सद्बुद्धि दे।

अन्त में हमारा निवेदन है कि जनता अंध-विश्वास को तिलांजलि देकर विवेक से काम ले, पुराणों का बहिष्कार करे और वेदों की ओर लौटे। और जो पौ० पंडित पुराणों की कथा सुना-सुनाकर भोली-भाली जनता को गुमराह करके लूटते हैं, वे हठ-दुराग्रह छोड़कर सत्य को ग्रहण करें क्योंकि 'सत्यमेव जयते नानृतम्' अर्थात् सत्य की विजय होती है, झूठ की नहीं।

सरकार को चाहिए कि वह पुराणों का प्रचार-प्रसार कानूनी अपराध घोषित करे तथा उन्हें जब्त कर ले जिससे पुराणों का पाखंड खत्म हो, हमारे महापुरुषों पर लगे मिथ्या कलंक मिटे और देश का गौरव बढ़े तथा उन्नति हो।

।। शमित्योम् ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

खुश खबरी! ४० रुपये में ४० पुस्तकें !! अरे वाह!!!

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० रामकृष्ण आर्य द्वारा लिखित क्रान्तिकारी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य	पुस्तक	मूल्य
एक ही रास्ता 'वैदिक धर्म'	२.००	वेद : क्या? क्यों? कैसे?	२.००
वेद और दयानन्द	१.००	वैदिक सूक्ति चालीसा	०.५०
गायत्री मंत्र : व्याख्या	२.००	ईश्वर : क्या? क्यों? कैसे?	१.००
ईश्वर अवतार नहीं लेता	०.५०	ईश्वरभक्ति बनाम मूर्तिपूजा	१.००
मूर्तिपूजा : क्या? क्यों? कैसे?	२.००	मूर्तिपूजा से हानियाँ	०.५०
मूर्तिपूजा : नरकधाम का महापथ	०.५०	मूर्तिपूजा का अन्त	१.००
फलितज्योतिष अंधविश्वास है	१.००	पितृयज्ञ बनाम मृतकश्राद्ध	१.००
अमर शहीद	१.००	स्वामी दयानन्द सरस्वती	३.००
दयानन्द की देन	३.००	दयानन्द की दार्शनिक मान्यताएँ	२.००
क्रांति के अग्रदूत : महर्षि दयानन्द	१.००	सत्य के योद्धा : स्वामी दयानन्द	१.००
सत्यार्थ प्रकाश दर्पण	२.००	ढोल की पोल	५.००
गीता सत्य की कसौटी पर	४.००	राम और कृष्ण	२.००
मानवता का मसीहा : देव दयानन्द	०.५०	आर्यसमाज से मिलकर चलो	१.००
आर्यसमाज और राजनीति	१.००	गीता का चक्रव्यूह	१.००
द्रौपदी के ५ पति नहीं थे	१.००	मांस खाने से हानियाँ	१.००
मृतक श्राद्ध पाखंड है	१.००	शंका-समाधान	२.००
पुराणों का पोलखाता	३.००	बौद्धमत या बुद्धूमत	१.००
ईसाई मत का खण्डन	०.५०	इस्लाम मत की समीक्षा	१.००
आर्यसमाज का चैलेञ्ज	१.००	पुराण शास्त्रार्थ के आइने में	१.००
असत्य पर सत्य की विजय	१.००	दयानन्द दिग्विजय	३.००
वैदिक ग्रन्थमाला (भाग-१)	१६.००	वैदिक ग्रन्थमाला (भाग-२)	१६.००
वैदिक ग्रन्थमाला (भाग-३)	१६.००	वैदिक ग्रन्थमाला (सम्पूर्ण)	४०.००

गीतों की पुस्तकें—

वैदिक गीतमाला	१६.००	वैदिक गीतांजलि	१६.००
वैदिक गीत चालीसा	६.००		

प्रकाशक- वैदिक पुस्तकालय, ग्रा० भाओरामपुर, पो० परसीपुर, जि० भदोही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.